डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा चकिया।

B.A. Part - III
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper - VIII

Date:- 03-02-2023

'सेवासदन : कथानक' (भाग-1)

दारोगा कृष्णचंद्र एक रसिक, उदार और सज्जन मनुष्य थे। पत्नी गंगाजली सती साध्वी स्त्री थी। उनके दो बेटियाँ थी— सुमन और शान्ता। दोनो रूपवती थी। सुमन स्वभाव से चंचल और अभिमानी थी तो शांता गम्भीर और सुशील।

कृष्णचंद्र जी ईमानदार दारोगा थे। रिश्वत लेना पाप समझते थे। स्वभाव से रसिक और उदार होने के कारण पूरी आमदनी बीवी बच्चियों पर खर्च कर डालते थे। उन्हें अपने प्राण से भी अधिक प्यार करते थे। अतः उनके लिए नित नई रेशमी साड़ियाँ, मखमली जुतियाँ खरीद लाते थे। सारा मकान कुर्सियों, मेजों और अलमारियों से भरा पड़ा था। लड़कियों को पढ़ाने के लिए इसाई लेडी रख ली थी। अब बड़ी लड़की विवाह के योग्य हो गई थी। परंतु कृष्णचन्द्र जी के पास दहेज और शादी के अन्य खर्च के लिए पैसे नहीं थे। उन्होंने बहुत कोशिश की परंतु बिना दहेज के वर मिलना असंभव था। अतः बहुत सोच विचार कर अपनी नीति के विरुद्ध उन्होंने एक हत्या के मामले में रिश्वत लेने की सोची। सीधे-सादे कृष्णचंद्र पहले ही

गुनाह में पकड़े गए। उन्हें चार साल की जेल हो गई। पत्नी गंगाजली और दोनों बेटियों पर जैसे पहाड़ टूट पड़ा। सुमन का रिश्ता जहाँ तय हुआ था, वह तो टूट गया। जो पैसा पास था वह कृष्णचंद्र के केस में लग गया।

गंगाजली दोनों बेटियों को लेकर अपने भाई के पास मायके चली गई। बहुत यत्न करने पर भी उमानाथ, सुमन के मामा सुमन के लिए अच्छा रिश्ता नहीं ला सके। अंत में तीस साल के एक दुहाजू गरीब आदमी से सुमन का ब्याह हुआ। शादी के दिन जब गंगाजली ने अपने दामाद को देखा, तो वह बहुत रोयी। सुमन का पति गजाधर महिना पन्द्रह रूपये कमाता है और एक छोटी कोठरी में रहता है। सुमन जो आज तक बड़े एवो आराम में रही है, उसे इस घर में निबाह करना कठीन होता है। सुमन को अच्छी चीजें खाने का और अच्छा पहनने का शौक है किन्तु पति के कम आमदनी में उसके शौक पूरे नहीं हो सकते। अतः वह पति से नाराज रहने लगती है। पति भी शुरू-शुरू में उसके लिए मिठाइयाँ लाया भी करता था, पर उसके कृपण स्वभाव के कारण उसे अच्छा नहीं लगता था। सुमन के घर के सामने भोलीबाई नाम

की वेश्या रहती थी। उसके ठाठ-बाट के रहन-सहन से ऐश्वर्य से सुमन मन-ही-मन आकर्षित होती है। मौली आते-जाते सुमन से परिचय करा लेती है और मेल-जोल बढ़ाना चाहती है। यह बात गजाधर को बिल्कुल अच्छी नहीं लगती। वह सुमन को दरवाजे से बाहर चिक से झाँकने भी नहीं देता। सुमन उस तंग कोठरी में पड़े-पड़े उब जाती है, उसका स्वास्थ्य बिगड़ने लगता है। उसकी हालत देखकर गजाधर को तरस आता है और वह सुमन से रोज गंगास्नान के लिए जाने की अनुमति देता है। गंगास्नान के बहाने सुमन घर से बाहर निकलने लगती है। एक दिन सुमन की पहचान सुभद्रा से होती है, दोनों सहेलियाँ बनती हैं। सुभद्रा के पति पद्मसिंह पेशे से वकील हैं और हाल में म्युनिसिपल कौंसिल के मेंबर बने हैं। दिल बहलाने के लिए सुमन सुभद्रा के यहाँ जाया करती है।

---क्रमशः जारी है---